प्रश्न हमारे, उत्तर आपके

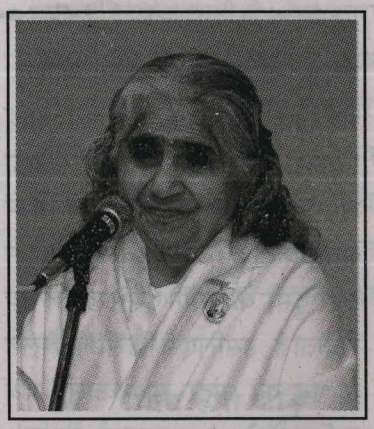

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

प्रश्नः- क्या शारीरिक सौन्दर्य भी हमारे कर्मों के कारण होता है? किसी की तरफ हमारा मन प्रभावित होता है तो क्या उसका कारण भी हमारे पिछले कर्म हैं?

उत्तरः- कलियुगी मनुष्य की आदत है, या तो उसे चमड़ी चाहिए या दमड़ी चाहिए। जब ज्ञान-योग आ जाता है तो हम समझ जाते हैं कि चाहे कोई काला हो या गोरा हो, हमें तो आत्मा से काम है, उसके गुणों से काम है। हमें ना तो किसी से प्रभावित होना है, ना किसी को नफरत की निगाह से देखना है। मेरे से प्रश्न पूछा गया कि तुम भगवान के पास क्यों आई? मैंने कहा, मुझे लोग कहते थे, तुम्हारी सूरत अच्छी नहीं है, तुम्हारा मुँह बड़ा है, तुम छोटे कद वाली हो। देखो, मनुष्य कितने देह अभिमानी हैं! मुझे लोग अच्छे नहीं लगते थे। सारा दिन मनुष्य खास लड़कियों को ही देखते थे। पढ़ी हुई कितनी है, शक्ल कैसी है, मेकअप कैसा करती है। मुझे कोई मनुष्य अच्छा नहीं लगता था। मैंने सोचा, लड़की होना मुसीबत हो गई। तो अंदर से भगवान को कहती थी, भगवान मुझे कोई इंसान नहीं चाहिए। लोग यही देखते हैं कि पैसा कितना है इसके माँ-बाप के पास। छोड़ो इंसानों को, भगवान के पास आई तो उसने तो झट से मुझे प्यार किया, जैसी हो, मेरी हो। भगवान इतना प्यार करता है। उसने कभी नहीं कहा, ऐसी हो, वैसी हो। मैंने भी कहा, जैसी हूँ, कैसी हूँ, तेरी हूँ। मैं सबको अच्छा देखती हूँ तो सब भी मुझे अच्छा देखते हैं।

प्रश्नः- जीवन में कोई दुख इतना है कि हमसे सहन नहीं होता। बहुत गहराई तक वह चला गया है, अंदर के दुख और बाहर के भय को कैसे खत्म करें?

उत्तरः- भय भी तो अंदर ही होता है परंतु आता बाहर से है। किसी ने मेरे पर गुस्सा किया, कोई नाराज़ हो गया तो जैसे अंदर भय बैठ जाता है। घड़ी-घड़ी वो बात ख्याल में रहेगी। बाबा हमेशा कहता था, किसी ने किसी पर गुस्सा किया तो वह बात छह महीने तक भूलती नहीं है। डर लगता है कि मैं बात करूँ तो कहीं वह गुस्सा न करे। जब ज्ञान की गहराई में जाते हैं तो महसूस होता है कि भय भी देह-अभिमान की निशानी है। भय इंसान को क्यों होता है? जब खुद पापकर्म करता है तो अंदर भय होता है। कोई दूसरा मेरे से ऐसा व्यवहार करता है तो मेरे अंदर इतनी सत्यता की शक्ति हो, मैं डरूँ क्यों? डर के मारे मैं संबंध क्यों बिगाड़ूँ? डर के मारे मैं झूठ बोलूँ, छिपाऊँ, ऐसा कर्म नहीं करूँ। नहीं तो भय और बढ़ता रहेगा। दुख के कारण भय है, भय के कारण दुख होता है। किसी से भी इंसान डरता है तो सदा ही दुखी रहता है। भय बड़ा नुकसानकारक है। इसलिए मैं कहती हूं, न मैं किसी से डरूँ, न डराऊँ, यह भी ध्यान रखना होगा। यदि किसी से कोई डरता है तो यह भी कमज़ोरी है। कोई पावरफुल नेचर वाला डराता है कि जैसे मैं चाहूँ वैसा तुझे करना पड़ेगा। कोई डर के कारण अच्छा कर्म करे, मर्यादा पर रहे। नहीं, डर के मारे नहीं। अच्छी बात समझकर करे, सच्चाई और प्रेम से करे, अपना भी कल्याण समझे तो दूसरों का भी